International Journal of
Global Multidisciplinary Research and Analytics
IJGMRA | ISSN (Online): 3107-6483
October-December 2025 | Vol. 01 | Issue 3
Website: www.thearyapublication.com

गोंड समुदाय के छात्रों की प्राथमिक शिक्षा

राजेश माधवराव धुर्वे*

*शोधार्थी, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत
ई-मेल: rajeshdhurve265@gmail.com
DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18207057
Accepted on: 30/12/2025 Published on: 10/01/2026

सारांश:

आदिवासी गोंड समुदाय के छात्रों की प्राथमिक शिक्षा एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक और शैक्षिक विषय है। हमारा देश भारत प्राचीन काल से ही अनगिनत परंपराओं से समृद्ध रहा है। हमारा देश प्राचीन संस्कृति का धनी है। इसमें आदिवासी समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका है। आदिवासी समाज प्राचीन काल से चला आ रहा एक समाज है। आदिवासी समाज हमेशा प्रकृति के सानिध्य में ही रहता है। वे गाँव से कुछ दूर पहाड़ियों पर रहते हैं। जो नियम अन्य समाजों पर लागू होते हैं, वे आदिवासी समाज पर लागू भी नहीं होते। उनके अपने नियम, अपना दायरा, अपने कर्तव्य होते हैं। इसलिए स्वाभाविक रूप से उनकी स्थिति दूसरों से अलग होती है। महाराष्ट्र की अनेक आदिवासी जनजातियों में, माड़िया, गोंड और परधान तीन सबसे पिछड़ी जनजातियाँ हैं। लेकिन सभी जातियों, जनजातियों और धर्मों के बच्चों को शिक्षा प्रदान करना हमारा प्राथमिक कर्तव्य है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अनुसार, सभी छात्रों को शिक्षा में शामिल करना आवश्यक है। शिक्षा के बारे में सोचते समय यह ध्यान में आता है कि प्राथमिक शिक्षा औपचारिक शिक्षा है। शिक्षा ही आधार है। प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से वांछित व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए शिक्षकों, अभिभावकों और समाज को मिलकर काम करना होगा। इसके लिए प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्यों को समझना आवश्यक है। आदिवासी गोंड समुदाय के छात्रों की प्राथमिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि यह समुदाय भारत के प्रमुख जनजातीय समूहों में से एक है और उनकी शिक्षा से जुड़ी कई सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ हैं।

मुख्य शब्द: *गोंड समुदाय, प्राथमिक शिक्षा, सरकारी योजना, सुधार।*

गोंड समुदाय का परिचय:

गोंड भारत की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक है। इनकी आबादी मध्य भारत में- मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, और झारखंड- में पाई जाती है। ये परंपरागत रूप से कृषि, वनों और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। इनकी अपनी भाषा (गोंडी) और विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराएँ हैं। प्राथमिक शिक्षा की

वर्तमान स्थिति:

गोंड समुदाय के बच्चे आमतौर पर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करते हैं। कई क्षेत्रों में विद्यालयों की भौगोलिक दूरी, शिक्षकों की अनुपस्थिति, और भाषाई अंतर के कारण शिक्षण-अधिगम में कठिनाइयाँ होती हैं। शिक्षण माध्यम प्रायः हिंदी या क्षेत्रीय भाषा होती है, जबकि बच्चों की मातृभाषा गोंडी होती है- इससे समझने में बाधा आती है। कुछ सरकारी और गैर-सरकारी योजनाएँ जैसे- आश्रम शालाएँ, Eklavya Model Residential Schools (EMRS), और Sarva Shiksha Abhiyan (SSA) इस दिशा में कार्यरत हैं।

प्रमुख चुनौतियाँ:

- भाषाई बाधा: शिक्षण की भाषा और बच्चों की मातृभाषा में अंतर।
- आर्थिक स्थिति: गरीबी के कारण बच्चों को पढ़ाई छोड़कर मजदूरी या घरेलू कार्यों में लगना पड़ता है।
- शिक्षक की कमी: दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों में प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव।
- सामाजिक-सांस्कृतिक दूरी: शिक्षण सामग्री में उनकी संस्कृति और जीवनशैली का अभाव।
- बुनियादी सुविधाओं की कमी: स्कूलों में बिजली, पानी, शौचालय और भोजन जैसी मूलभूत सुविधाओं की कमी।

सुधार और पहल:

- बहुभाषिक शिक्षा (Multilingual Education): प्रारंभिक कक्षाओं में गोंडी भाषा में शिक्षण सामग्री विकसित करना।
- स्थानीय शिक्षक भर्ती: समुदाय से जुड़े शिक्षकों की नियुक्ति ताकि भाषा व संस्कृति का तालमेल बना रहे।
- आवासीय विद्यालय: EMRS और अन्य आश्रम शालाएँ जो दूरस्थ क्षेत्रों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराती हैं।

सरकारी योजनाएँ:

- samagra shiksha abhiyan
- Mid-Day Meal Scheme
- Tribal Sub-Plan (TSP)
- Digital Learning Initiatives

प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य निम्नानुसार बताए जा सकते हैं।

1) बच्चों में सामाजिक कौशल को बढ़ाना और सीखने के प्रति प्रेम पैदा करना।

2) पढ़ना, लिखना और अंकगणित जैसे बुनियादी कौशल सिखाना।

3) छात्रों का समग्र विकास करना।

4) विभिन्न विषयों का बुनियादी परिचय प्रदान करना।

इन सभी उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, यह स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा ही विद्यार्थी विकास का मूल है। इसके लिए, सभी को निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने का सरकार का निर्णय अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए, गोंड आदिवासी समुदाय के बच्चों को शिक्षा की धारा में लाने के लिए, उन्हें बुनियादी स्तर से ही शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। उन्हें शामिल करना बहुत ज़रूरी है। तभी उनका बेहतर विकास हो सकेगा। अध्ययन के परिणाम इस बात के सूचक हैं कि प्राथमिक शिक्षा से छात्रों में किस प्रकार के व्यवहारिक परिवर्तन अपेक्षित हैं। अध्ययन के परिणामों के माध्यम से छात्रों में अपेक्षित परिवर्तनों को समझकर, हम गोंड जनजाति के छात्रों की वर्तमान स्थिति को समझ सकते हैं। इससे हमें यह अंदाज़ा होता है कि हमें उन्हें क्या और कैसे सीखने के अनुभव प्रदान करने की आवश्यकता है। इससे छात्रों के विकास को सही दिशा में ले जाने में मदद मिलेगी।

प्राथमिक शिक्षा से छात्रों की आगे की अपेक्षाएँ रखे गए हैं:-

1. घर और स्कूल में प्रयुक्त भाषा के बीच संबंध बनाना।

2. भाषा की लय और शैली को समझें और उसका प्रयोग करें।

3. लेखन के संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त भाषा का प्रयोग करें।

4. अपनी कल्पना से कहानियाँ और कविताएँ लिखना।

5. जो कुछ देखा, सुना और पढ़ा है उसका अपनी भाषा में वर्णन करना, उसके बारे में सोचना और अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी (मौखिक या लिखित रूप में) व्यक्त करना।

6. चित्रों को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना।

7. अनुभव के स्तर जैसे कहानी और कविता आदि पर कुछ स्थितियों के संदर्भ में स्तर/स्तरवार निष्कर्ष या समाधान सुझाना।

8. प्रतीकों को देखकर, उनकी ध्वनियों को सुनकर और समझकर तथा उनके बीच के संबंधों को समझाकर मराठी भाषा की लिपि लिखने का प्रयास करें।

9. चित्रों और संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाकर पढ़ना।

10. पढ़ने की प्रक्रिया को दैनिक जीवन की ज़रूरतों से जोड़ना। (स्कूल के अंदर और बाहर)

11. जो आपने सुना और पढ़ा है उसे अपने शब्दों में समझें और व्यक्त करें तथा लिखें।

12. सुनी और पढ़ी गई कहानियों या कविताओं को समझें, उन्हें अपने अनुभवों से जोड़ें और अपने शब्दों में कहें।

13. पुस्तकालय में विभिन्न स्रोतों (पढ़ने के रैक, बोर्ड, विभिन्न वस्तुएं) से अपनी पसंद की पुस्तकें ढूंढें और पढ़ें।

14. विभिन्न विषयों पर एवं विभिन्न उद्देश्यों के लिए लेखन।

15. स्तर के अनुसार कहानियाँ, कविताएँ आदि रुचि एवं आनन्द के साथ सुनना एवं सुनाना।

16. विषय साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत संदर्भ के अनुसार नये शब्दों के अर्थ सीखना।

17. विभिन्न संदर्भों में स्वयं को अभिव्यक्त करने का प्रयास करना (बोलकर / संकेतों के माध्यम से / सांकेतिक भाषा / चित्रों के माध्यम से)

18. अपने अनुभवों और विचारों को स्वतंत्रतापूर्वक और आसानी से व्यक्त करें।

19. दूसरे लोग जो कहते हैं उसे रुचि और ध्यान से सुनना।

इन सभी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए, गोंड आदिवासी समुदाय के छात्रों को विशेष शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है। चूँकि इस समुदाय की बोली मराठी नहीं है, बल्कि थोड़ी अलग है, इसलिए छात्रों को समझने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन छात्रों के लिए प्राथमिक शिक्षा को आसान बनाने के लिए शुरुआत में ही उनकी समस्याओं को समझना महत्वपूर्ण है। लगाओ

गोंड आदिवासी समुदाय की प्राथमिक शिक्षा में समस्याएँ:

1. माता-पिता की शिक्षा में रुचि की कमी

2. बार-बार अनुपस्थित रहना

3. आदिवासी समाज में अत्यधिक गरीबी और अंधविश्वास

4. अन्य समाज से दूर, प्रकृति में रहना पसंद करें।

5. बोली की समस्या

6. अनाकर्षक स्कूल वातावरण, सुविधाओं का अभाव

7. कुपोषण

8. संचार साधनों का अभाव

9. लड़कियों की शिक्षा के प्रति उदासीनता

10. जीवन और शिक्षा के बीच सामंजस्य का अभाव।

11. बोली समस्या

12. निरंतर प्रवास

13. बच्चों के साथ प्रवास की प्रवृत्ति उसका

14. स्कूल और ग्रामीण बस्ती के बीच की दूरी अधिक है।

इन विभिन्न कारणों से, गोंड आदिवासी समुदायों के लिए शिक्षा में कठिनाइयाँ हैं, लेकिन फिर भी कुछ लोग उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। वर्तमान में छात्र स्कूल जाते तो दिख रहे हैं, लेकिन जल्द ही उनकी उपस्थिति में उल्लेखनीय कमी देखी जा रही है। साथ ही, आय के लिए बार-बार पलायन के कारण, इन छात्रों के स्कूल छोड़ने की दर भी अधिक देखी जा रही है। उनकी विभिन्न समस्याओं के लिए उचित समाधान सुझाना बहुत महत्वपूर्ण है।

गोंड जनजातीय समुदाय को प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के लिए किए जा रहे प्रयास:

1)विभिन्न छात्रवृत्तियाँ एवं योजनाएँ: सरकार ने जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए विभिन्न छात्रवृत्तियाँ एवं योजनाएँ लागू की हैं। स्वर्ण जयंती छात्रवृत्ति योजना, उपस्थिति भत्ता आदि।

हालाँकि, आदिवासी लोग इनका लाभ उठाने से बहुत हिचकिचाते हैं। उनके पास ज़रूरी दस्तावेज़ नहीं होते या कभी-कभी वे गंभीर नहीं होते।

2) विद्यालय सेवाएँ एवं सुविधाएँ: विद्यालय में विभिन्न भौतिक सुविधाओं को आकर्षक बनाकर विद्यालय के वातावरण को आकर्षक एवं सुखद बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

3) एकीकृत बाल विकास परियोजना के अंतर्गत स्वस्थ आहार योजना का क्रियान्वयन।

4) आश्रम विद्यालयों की स्थापना करना तथा वहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।

5) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार कुछ नवीन उपाय सुझाए गए हैं: - आदिवासी युवाओं को प्रशिक्षित करना, आदिवासी

विद्यार्थियों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करना, आदिवासी संस्कृति, कला, परंपराओं और उनकी विरासत को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम तैयार करना।

प्रारंभिक वर्ष उनकी प्रगति और आनंददायक शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। इसीलिए प्राथमिक शिक्षा को आनंददायक बनाने के लिए कुछ बदलाव अपेक्षित हैं, जो इस प्रकार हैं:-

प्राथमिक शिक्षा को आनंददायक बनाने के लिए शिक्षण एवं अधिगम विधियों में परिवर्तन:-

1. प्राथमिक शिक्षा को आनंददायक बनाने के लिए स्कूलों में जनजातीय बोली को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

2. साथ ही, आदिवासियों की कला, संस्कृति, सामाजिक, सांस्कृतिक विरासत और संरक्षण को उनकी शिक्षा में शामिल किया जाना चाहिए, ताकि शिक्षा उन्हें अपनी लगे।

3. शिक्षा के महत्व को जनजातीय समुदायों के बच्चों, उनके माता-पिता और समुदाय को बार-बार बताया जाना चाहिए।

4. आदिवासी युवाओं को आदिवासी आश्रम विद्यालयों में नेतृत्व कार्य करने का अवसर दिया जाना चाहिए, जो अन्य आदिवासी लोगों के लिए उपयोगी और प्रेरणादायक होगा।

5. आदिवासी बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा भी दी जानी चाहिए। सरकार उन्हें अपनी विभिन्न कलाओं और कौशलों के प्रदर्शन का अवसर प्रदान करे और उन्हें आय का स्रोत उपलब्ध कराए।

6. उनका पलायन रोकने के लिए उन्हें आश्रय, रोजगार और अन्य सेवा सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।

निष्कर्ष:

यह विषय दर्शाता है की गोंड समुदाय के बच्चों की प्राथमिक शिक्षा को सशक्त बनाने के लिए भाषा, संस्कृति, और स्थानीय संदर्भों को शिक्षा के केंद्र में लाना आवश्यक है। जब तक शिक्षा बच्चों के अपने परिवेश से जुड़ी नहीं होगी, तब तक साक्षरता दर में वास्तविक सुधार नहीं हो सकेगा। गोंड आदिवासी समुदाय के विकास के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है। क्योंकि भारत एक विकसित राष्ट्र बनने की राह पर है, ऐसे में गोंड आदिवासी भाइयों का सहयोग अत्यंत मूल्यवान होगा।

संदर्भ:

1. गुणगुणी, एल. एल. (2014). भारत मे आदिवासी शिक्षा, रावल प्रकाशन.

2. जोशी, रामशरन (1997). आदिवासी समाज और शिक्षा. ग्रंथ शिल्पी.

3. गारे, गोविंद (2009). आदिवासियों की शिक्षा. साकेत प्रकाशन.

4. श्रीवास्तव, कमल (2013). भारतीय जन-जातीय संस्कृति. बुक्स आदि.

5. जोशी, कदम, जाधव (2011). विशेष शिक्षा. विद्या प्रकाशन.

6. हसणेन, नदीम (2006). जनजातीय भारत, जवाहरलाल पुब्लिशर्स.

7. अटल, योगेश (2011). आदिवासी भारत, रावत पब्लिकेशन.